

शिक्षित अनुसूचित जाति के परिवार में समाजीकरण की प्रक्रियाओं में परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शिवानी कुमारी

रिसर्च स्कॉलर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर, दरभंगा

डॉ० विश्वनाथ झा

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग

सी.एम. कॉलेज, दरभंगा

सार

भारत एक लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक देश है भारत देश की विशेषता है “ विविधता में एकता ” क्योंकि विभिन्न जाति , धर्म , संस्कृति और परंपरा के लोग एकता के साथ रहते हैं। यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। किसी व्यक्ति की पहचान जाति विशेष , जातीय शाखा विशेष तथा परिवार विशेष के सदस्य के रूप में जानी और मानी जाती है। जाति व्यवस्था प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में मौजूद है जो एक सामाजिक बुराई ही नहीं वरन् समाज की प्रगति में बाधा भी है। मानव सभ्यता का इतिहास गवाह है कि महिला अस्मिता , स्वतंत्रता व समानता का अधिकार सदा से ही उलझनपूर्ण रहा है। समाज में विद्यमान सम्पूर्ण व्यवस्था में महिलाओं को दोयम दर्जे का ही स्थान दिया गया। इस पुरुष प्रधान समाज और सामाजिक असमानता , अशिक्षा , अंधविश्वास , दहेज प्रथा , जातिगत छुआछुत , लिंग आधारित भेद ने स्थिति को और भी गंभीर कर दिया। महिलाएं वंचितों में भी वंचित मानी गई हैं।

मुख्यशब्द: शिक्षित अनुसूचित जाति, समाजीकरण, समाजशास्त्रीय

परिचय

सामाजिक परंपराएं इन्हें और असहाय , व पराजित बनाती हैं। भारतीय समाज में महिलाएं शोषित तो हैं किन्तु इनमें महिलाओं का एक ऐसा वर्ग भी सम्मिलित है जिनमें महिलाओं की स्थिति और भी दयनीय एवं सोचनीय है जो सदियों से जाति से जुड़ी वैचारिक मान्यताओं के कारणरवश उपेक्षित , व शोषित है जिसे अनुसूचित जाति कहा जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में अनुसूचित जाति की कुल आबादी 25 प्रतिशत है। इतनी बड़ी आबादी होने के बावजूद भी यह समुदाय राजनीतिक , आर्थिक और सामाजिक रूप से काफी पिछड़ा हुआ है।

भारत गाँवों का देश है , पूरे विश्व भर में अपनी महान संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों के लिये एक प्रसिद्ध देश है। अगर छत्तीसगढ़ के गाँवों का इतिहास देखें तो पता चलेगा कि यहाँ अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति दयनीय तथा चिंताजनक हैं। यहां महिलाएं अनेक कष्टों के साथ बुरी मान्यताओं का बोझ ढो रही हैं , मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। अनुसूचित जाति की महिलाएं जो अधिकांशतः अनौपचारिक , असंगठित क्षेत्र में हैं , शिक्षा , स्वास्थ्य और उत्पादक संसाधनों तक पहुंच अपर्याप्त है। अतः वे ज्यादातर सीमांत , गरीब और सामाजिक रूप से वंचित रह जाती हैं। सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर तमाम प्रयासों के बावजूद अनुसूचित जाति की महिलाओं पर अत्याचार की घटनाएं लगातार सामने

आती रहती हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् सरकार ने इन महिलाओं के सामाजिक - आर्थिक उत्थान व विकास में बराबर की हिस्सेदारी के अवसर प्रदान करने हेतु अनेक कानूनों का निर्माण कर उनके सशक्तीकरण को सुनिश्चित करने विशेष प्रयास किया है। अपवाद को छोड़कर यदि समग्रता में देखा जाए तो वर्तमान समय में भी भारतीय समाज पुरुष प्रधान सोच से ग्रस्त है। लिंग संबंधी असमानता के आधारभूत कारण सामाजिक और आर्थिक ढांचे से जुड़े हैं, जो अनौपचारिक एवं औपचारिक मानकों तथा प्रथाओं पर आधारित हैं। अनेक अधिकारों, कानूनों के बावजूद अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक स्थिति बेहद कमजोर व चिंताजनक है।

समाजशास्त्रीय महत्व

महिलाओं की स्थिति के मूल्यांकन हेतु उनकी सामाजिक रूपरेखा का अध्ययन करना आवश्यक है। सांस्कृतिक प्रतिमान एवं मूल्य प्रणालियों का प्रभाव पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार संबंधी प्रत्याशाओं पर पड़ता है। समाजशास्त्रीय शोध में विषयवस्तु की विवेचना हेतु जनसामान्य के विचारों, विश्वासों, मूल्यों तथा मान्यताओं एवं दृष्टिकोणों को आधार बनाया जाता है। जहाँ शहरों में लोग जातिगत बंधनों से आगे बढ़ रहे हैं वही दूसरी ओर ग्रामीण समाज जाति को महत्व देता है, अब भी खोखली परम्पराओं की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। आज भी देश में लोग छुआछूत जैसी बुरी मानसिकता के शिकार हैं। देश के विकास हेतु महत्वपूर्ण पूर्व शर्त यह है प्रत्येक क्षेत्र में इन महिलाओं की समान सहभागिता हो, इससे ना केवल महिलाओं का विकास होगा वरन् समाज भी प्रगति की ओर अग्रसर होगा। चूँकि अनुसूचित जाति की महिलाएं सामाजिक पिछड़ेपन के कारण ही समाज की मुख्य धारा से पीछे रह गई हैं। अतः इस दृष्टि से आवश्यक है कि इस विषय पर समाजशास्त्रीय अध्ययन हो।

उद्देश्य

1. अनुसूचित जातिकी सामाजिक प्रस्थितिका अध्ययन करना।
2. शिक्षित अनुसूचित जाति के परिवार में समाजीकरण की प्रक्रियाओं में परिवर्तन

अनुसूचित सामाजिक व्यवस्था पर प्रभाव

भारतीय संविधान के प्रारूपण के दौरान "अनुसूचित जाति" शब्द को अपनाया गया था। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 365(2) के अनुसार, अनुसूचित जाति का अर्थ ऐसी जातियाँ, नस्लें या जनजातियाँ हैं जिन्हें भारतीय संविधान के अनुच्छेद 341 के तहत अनुसूचित जातियाँ माना जाता है (मंजू कुमार 1982)। अनुसूचित जाति के लोग पूरे भारत में पाए जाते हैं। वे सामाजिक रूप से वंचित समूह हैं। लोगों के इस वर्ग को विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे: हरिजन, कैडेलस, अवर्ण, स्वपहा, अछूत, बहिष्कृत, दलित वर्ग, अंत्यज, मृत्पा, पंचम, बाहरी जातियाँ, पूर्व अछूत, दलित, चमार, मोची, आदि। अनुसूचित जाति विभिन्न समुदायों में, जाति और उपजातियों के विशिष्ट रूप में पाई जाती है। असम में 16 उपजातियाँ पाई जाती हैं जिनके अलग-अलग व्यवसाय, निवास, भाषा आदि हैं। कुछ अनुसूचित जाति समुदाय भारत के विभिन्न राज्यों से असम में आकर बसे हैं। वे मुख्य रूप से सीमांत किसान या भूमिहीन मजदूर, कारीगर, छोटे दुकानदार, मोची, कुम्हार, मछुआरे, चर्मकार, बंधु आमजदूर, रात्रि सामाजिक सफाई कर्मि, शौचालय साफ करने वाले, कपड़े धोने वाले, मैला ढोने वाले आदि हैं।

अतीत में इन समुदायों का उच्च जातियों द्वारा शोषण किया जाता था। उच्च जातियों द्वारा सामाजिक बहिष्कार के कारण ये लोग अपना जीवन और सम्मान को बचाने के लिए और मानव जीवन जीने के लिए विभिन्न स्थानों और यहां तक

कि दूसरे राज्यों में भी बिखर गए। एम.के. गांधी, डॉ.बी.आर. अंबेडकर, ज्योतिराव फुले, स्वामी विवेकानंद इत्यादि जैसे कई सामाजिक कार्यकर्ताओं और सुधारकों ने अतीत में अनुसूचित जातियों के लोगों की बेहतरी के लिए लड़ाई लड़ी। उन्होंने देश के पिछड़े और दलित लोगों के सामाजिक उत्थान के लिए लड़ाई लड़ी। डॉ.बी.आर.अंबेडकर ने नारा दिया: “शिक्षित बनो, आंदोलन करो और संगठित हो”।

शिक्षा पर प्रभाव

धारा

46

अनुसूचित जाति के आर्थिक और शैक्षिक हितों का विशेष प्रावधानों का ध्यान रखते हुए विशिष्ट उद्देश्यों को दर्शाती है। सामाजिक-आर्थिक असुविधा की क्षतिपूर्ति के अपने प्रयासों में भारतीय राज्य ने सक्षम बनाने वाले प्रावधानों की एक ऐसी श्रृंखला तैयार की है, जो अनुसूचित जाति के बालकों की विद्यालयी पहुँच और माध्यमिक एवं उच्च विद्यालय स्तर पर इनके ठहराव को बढ़ावा देगी। राज्य और केन्द्र दोनों ही सरकारों ने विशेष शैक्षिक प्रावधानों को बनाने की जिम्मेदारी उठाई। पहली दो पंचवर्षीय योजनाओं का केन्द्र विद्यालय जैसी मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराना, विशेषतः किताबें और छात्रवृत्तियाँ देना रहा। चौथी पंचवर्षीय योजना के बाद सक्षम बनाने वाले हस्तक्षेपों का व्यापक फैलाव हुआ। अनुसूचित जाति की स्वयंसेवी संस्थाओं को सहायता हेतु अनुदान देना; मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति जिसमें शामिल है, अस्वच्छ व्यवसायों जैसे कि चमड़ा बनाना, जानवरों की खाल छीलना और नाली, पाखाना सफाई करना इत्यादि को अपनाने वाली जातियों और परिवारों के बच्चों के लिये विशेष छात्रवृत्तियाँ और विद्यालय के उच्च एवं माध्यमिक स्तर के लड़के और लड़कियों के छात्रावास। रूढ़िवादी वातावरण के कारण अनुसूचित जाति की लड़कियों की शिक्षा दर में कमिवाले जिलों के लिये केन्द्र सरकार ने विभिन्न उपायों वाली एक योजना की शुरुआत अनुसूचित जाति की लड़कियों के लिये की है।

समाजीकरण एक शब्द है जिसका उपयोग समाज और समाज के बीच होने वाली प्रक्रियाओं का वर्णन करने के लिए किया जाता है व्यक्तिगत। किसी व्यक्ति का समाजीकरण, बदले में, पारिवारिक, औपचारिक जैसे कारकों से प्रभावित होने वाली प्रक्रिया है और अनौपचारिक सामाजिक समूह, शिक्षा प्रक्रियाएं, पालन-पोषण, आदि और व्यक्ति; की अपेक्षाओं के अनुरूप व्यक्तिगत कार्यात्मक व्यवहार को आकार देने की एक प्रक्रिया वह संस्कृति या समाज जिसमें यह व्यक्ति रहता है। प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति को संरक्षित करके विकसित करता है मानदंडों, रीति-रिवाजों, मूल्यों, परंपराओं, सामाजिक भूमिकाओं, प्रतीकों और भाषाओं का पालन करने और समाजीकरण में मदद मिलती है व्यक्ति समय के साथ इन मूल्यों को सीखता है, विरासत में प्राप्त करता है, संरक्षित करता है और स्थानांतरित करता है। इसके अलावा, इससे उसे नया हासिल करने में मदद मिलती है सामुदायिक जीवन में पर्याप्त समावेश के लिए आवश्यक कौशल और आदतें। दूसरे शब्दों में, समाजीकरण योगदान देता है एक निश्चित मूल्य प्रणाली विकसित करके समाज द्वारा एक व्यक्ति को स्वीकार करने की प्रक्रिया। हम बता सकते हैं कि समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज और संस्कृति का अस्तित्व बना रहता है। लेकिन यह उन तरीकों, पैटर्न और मॉडलों पर ध्यान केंद्रित करता है कुछ मानदंडों, मानकों और मूल्यों को लागू करके व्यक्तियों पर। यह सीखने, आंतरिक करण और से संबंधित है समाज के रीति-रिवाजों, व्यवहार के मानदंडों और संस्कृति को अगली पीढ़ियों तक स्थानांतरित करना एक युवा को विभिन्न सामाजिक संरचनाओं में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए तैयार करने में समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

किसी व्यक्ति के समाजीकरण में शिक्षा की भूमिका

पिछले कुछ वर्षों में "समाजीकरण" शब्द की कई परिभाषाएँ दी गई हैं और वे सभी अलग-अलग हैं। अपनी रिपोर्ट "एक सतत समझ के रूप में समाजीकरण" में वायलेटा जॉर्जीवा ने नवीनतम विचारों को एकत्रित किया है समाजीकरण को "व्यक्ति के व्यक्तित्व में परिवर्तन, अधिग्रहण की प्रक्रिया" के रूप में निर्धारित किया जाता है भाषा, सामाजिक मूल्यों और अनुभव (मानदंड, दृष्टिकोण, व्यवहार के पैटर्न), संस्कृति के एक व्यक्ति द्वारा जो कुछ समाजों, सामाजिक समुदायों और समूहों में मौजूद है, सामाजिक संबंधों और सामाजिकता का संवर्धन अनुभव" (मर्दाहिव, 2003ए); एक व्यक्ति और उसके बीच बातचीत की एक जटिल प्रक्रिया के रूप में सामाजिक परिवेश के तत्व, जिनका उत्पाद व्यक्ति के व्यवहार का सामाजिक विनियमन है स्थापित सांस्कृतिक मूल्य और मानदंड" (देसेव, 2003बी); "अधिग्रहण के माध्यम से समग्र व्यक्तित्व निर्माण" के रूप में किसी व्यक्ति द्वारा भौतिक और आध्यात्मिक वातावरण में महारत हासिल करके ज्ञान, मानदंडों और मूल्यों का विकास, भाषा और संचार के प्रकार" (जॉर्जीवा, 2016)। किसी व्यक्ति का समाजीकरण आवश्यक है सामाजिक संरचना को आकार देना। शिक्षा के माध्यम से, समाज के सदस्य अपने ज्ञान, कौशल, मूल्यों को स्थानांतरित करते हैं और युवा पीढ़ी के व्यवहार के पैटर्न। इस प्रकार है ज्ञान, आत्म-संरक्षण और निरंतरता गारंटी। इस अर्थ में शिक्षा को समाजीकरण की एक प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है। दोस्तों के साथ बातचीत, पारिवारिक रिश्ते और उसके बाद स्कूल तीन खेल की भूमिका निभाते हैं जिनके सहयोग से लोग सीखते हैं नियमों का पालन करें, अपने काम के लिए पुरस्कृत हों और सीखें कि सार्वजनिक स्थानों पर कैसे व्यवहार करना है

समाजीकरण के उदाहरण जो किसी व्यक्ति को अपनी संस्कृति के भीतर कार्य करने की अनुमति देते हैं। समाज के विकास में शिक्षा की भूमिका का अधिक विस्तार से विश्लेषण करते हुए, हमें दो प्रमुख उत्तर देने की आवश्यकता है प्रश्न: "किसी व्यक्ति के समाजीकरण की विशेषताएं क्या हैं" और "किसी व्यक्ति में शिक्षा की क्या भूमिका है।" समाजीकरण" समाजीकरण से तात्पर्य संस्कृति प्राप्त करने और किसी दिए गए समाज के मानदंडों को स्वीकार करने की सामान्य प्रक्रिया से है। उचित/अपेक्षित व्यवहार के विचार जो समाज के अधिकांश सदस्य अपनाते हैं, उन्हें मानदंड के रूप में जाना जाता है। सांस्कृतिक मानदंड एक स्थापित मानक है जो समूह सोच और व्यवहार के संदर्भ में अपेक्षा करता है।

ये अपेक्षाएँ और वांछित व्यवहार अक्सर एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में भिन्न होते हैं। वे प्रकट भी होते हैं मूल्यों, लोक आदतों, रीति-रिवाजों, परंपराओं, नैतिकता, भाषा और बहुत कुछ जैसे विभिन्न रूपों में स्वयं। नैतिकता के विपरीत कुछ भी, जैसे हत्या और डकैती, दंडित किया जाता है। इससे समाज के सदस्यों को सीखने में मदद मिलती है।

किसी व्यक्ति का समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति की भूमिकाएँ निर्धारित होती हैं समाज, जिन मूल्यों और मानदंडों को वह पहचानता है और उनका पालन करता है, वे शामिल होते हैं और व्यक्ति को आकार देते हैं वह स्वयं। 'प्रामाणिक अभिविन्यास' के रूप में, व्यक्ति में सामाजिक भाग सामाजिक क्रियाओं की संरचना करता है व्यक्ति, जो बदले में सामाजिक संरचनाओं और सामाजिक व्यवस्था के कामकाज का समर्थन करते हैं। सही अर्थ में, यह कहा जाना चाहिए कि व्यक्तिगत समूह कुछ मानदंड बनाते हैं जो समाजीकरण की प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

हालाँकि, किसी व्यक्ति का समाजीकरण यह सवाल उठाता है कि आसपास के लोग इसमें कैसे भाग लेते हैं। क्या यह प्रक्रिया छोटे या बड़े समूहों में अंतर्निहित है? किसी को सामाजिकता की आदत कैसे पड़ती है क्रियाएँ? एक एकीकृत प्रक्रिया के रूप में किसी व्यक्ति का समाजीकरण किस प्रकार व्यक्ति को हिस्सा बनने में मदद करता है सामाजिक संरचना? आदर्श, मानकता की अवधारणा व्यक्तित्व के सामाजिक पहलुओं से अविभाज्य है। अपने पूरे जीवन में, एक व्यक्ति अपने परिवार द्वारा उस पर थोपे गए कुछ मानदंडों को स्वीकार करने या त्यागने का प्रयास करता है, समाज, धर्म, आदि। इस प्रकार, आदर्श एक सार है, सामाजिक संबंधों से ऊपर, सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है, लोगों की गतिविधियों में व्यवस्थित रूप से अंतर्निहित और सबसे विशिष्ट और टिकाऊ व्यक्त करना कनेक्शन और रिश्ते।

सामाजिक मानदंड सामाजिक अस्तित्व की एक सार्वभौमिक संपत्ति के रूप में व्यक्त किया गया है नुस्खा, एक स्थापित आदेश, एक आदर्श नियम, आदि।

यहीं पर दूसरे प्रश्न का महत्व, जिसका हमें उत्तर देना है, प्रकट होता है, अर्थात् 'क्या है।' व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका। शिक्षा एक सामाजिक एवं ऐतिहासिक श्रेणी है। सभी समाजों के लिए एक अपरिहार्य संसाधन होने के नाते यह योग्य है विशेष ध्यान। यह दावा कि शिक्षा एक क्रिया, प्रक्रिया और परिणाम है, इसकी जटिलता की ओर इशारा करता है मुद्दा। शिक्षा ज्ञान, कौशल, कला और समझ को समृद्ध करती है, वांछित को बढ़ावा देने का प्रयास करती है एक बेहतर समाज में परिवर्तन। शिक्षा की अवधारणा विभिन्न कारणों से कई प्रकार से बदलती रहती है और समाज के ऐतिहासिक परिवर्तन से बुनियादी सामाजिक प्रतिमानों में बदलाव आता है। एक सामाजिक परिघटना के रूप में, शिक्षा सर्वोपरि एक वस्तुनिष्ठ सामाजिक मूल्य है। नैतिक, बौद्धिक, वैज्ञानिक और किसी भी समाज की तकनीकी, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षमता सीधे स्तर पर निर्भर करती है शिक्षा। शिक्षा, सामाजिक और ऐतिहासिक प्रकृति की होने के कारण, समाज के ऐतिहासिक प्रकार से निर्धारित होती है

यह सामाजिक कार्य करता है। यह सामाजिक विकास के उद्देश्यों, अर्थव्यवस्था के स्तर आदि को दर्शाता है समाज में संस्कृति, उसके राजनीतिक और वैचारिक दृष्टिकोण की प्रकृति, और शिक्षक और छात्र विषय हैं जनसंपर्क का। शिक्षा के माध्यम से, समाज अपना विकास सुनिश्चित करता है (ओएससीई ऑफिस फॉर डेमोक्रेटिक)। संस्थाएँ और मानवाधिकार, 2021बी)। व्यक्तित्व निर्माण एक सामाजिक घटना के रूप में समाजीकरण और शिक्षा पर निर्भर करता है और सबसे ऊपर है एक वस्तुनिष्ठ सामाजिक मूल्य। यह सामाजिक विकास के उद्देश्यों, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के स्तर को दर्शाता है समाज, उसके राजनीतिक और वैचारिक दृष्टिकोण की प्रकृति, व्यक्तिगत और पारस्परिक संबंध।

शिक्षा, समाजीकरण के विपरीत, जो एक व्यक्ति और के बीच एक सहज अंतःक्रिया है पर्यावरण को सचेत रूप से नियंत्रित प्रक्रिया माना जाता है, भले ही शिक्षा धर्मनिरपेक्ष हो या नहीं। समुदाय के प्रत्येक सदस्य के समाजीकरण में शिक्षा की भूमिका, चाहे कहाँ, किसके द्वारा और कहीं भी हो उसका पालन-पोषण किन परिस्थितियों में हुआ, इसका उद्देश्य मतभेदों पर काबू पाने के लिए परिस्थितियाँ बनाना है एकीकरण और, यदि आवश्यक हो, अनुकूलन। शिक्षा प्रदान करके व्यक्ति के समाजीकरण का समर्थन करती है ज्ञान का आवश्यक आधार जो संचार, पारस्परिक संबंधों आदि को सक्षम बनाता है सामान्य - आसपास के वातावरण में समझ, स्वीकृति और संचार। समाजीकरण है वह बुनियादी साधन जिसके द्वारा बच्चे कम उम्र से ही प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक कौशल हासिल करना शुरू कर देते हैं वे स्वयं को अपने समाज के पूर्णतः क्रियाशील सदस्य के रूप में देखते हैं। ऐसा माना जाता है कि वही सबसे प्रभावशाली होते हैं

शैक्षिक प्रक्रियाएँ जिन्हें व्यक्ति अनुभव कर सकता है। एक सामाजिक घटना के रूप में शिक्षा अपेक्षाकृत है स्वतंत्र प्रणाली जिसका कार्य समाज के सदस्यों को कुछ ज्ञान में महारत हासिल करना सिखाना है (मुख्य रूप से वैज्ञानिक), वैचारिक और नैतिक मूल्य, क्षमताएँ, कौशल, व्यवहार के मानदंड, जिनकी सामग्री है इस समाज की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना और इसकी सामग्री के स्तर द्वारा निर्धारित किया जाता है तकनीकी विकास। एक ओर, शिक्षा अधिक रोजगार के अवसर प्रदान कर सकती है और फलस्वरूप व्यक्ति की सामाजिक स्थिति बेहतर होती है। दूसरी ओर, सामाजिक असमानता, अपर्याप्तता या अभावउचित शिक्षा के लिए वित्तीय संसाधन किसी के समाजीकरण को सीमित करते हैं। आज शिक्षा, पालन-पोषण और समाजीकरण शब्द व्यापक रूप से शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान में उपयोग किए जाते हैं और अन्य विज्ञान। यह स्पष्ट है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सफल समावेशन की प्रक्रिया में योगदान देती है समाज में युवा लोग। और यदि समाजीकरण "मनुष्य-समाज" के संदर्भ में संबंध पर विचार करता है, तो शिक्षा का संबंध "आदमी-आदमी" के रिश्ते से है।

समाजीकरण के संदर्भ में, शिक्षा समाज की सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखती है और इसका परिचय देना लक्ष्य रखती है नए सदस्य - जिन्हें शिक्षित किया जाना है - सामाजिक परंपराओं, मानदंडों, रीति-रिवाजों आदि के लिए। दूसरे शब्दों में, जब कोई समाज मजबूत सामाजिक संगठन बनाने का प्रयास करता है और अपने सदस्यों को उनकी सामाजिक उपेक्षा की अनुमति नहीं देता है परंपराएँ, यह बड़े पैमाने पर शिक्षा के सामाजिक लक्ष्य पर जोर देती हैं। समाजीकरण और शिक्षा दोनों शामिल हैं सीखना, लेकिन एक बहुत महत्वपूर्ण अंतर है। समाजीकरण एक ऐसी चीज़ है जो हमारे अंदर घटित होती है रोजमर्रा की जिंदगी में, इसकी योजना नहीं बनाई जा सकती, यह हमें अपनी पहचान, वास्तविकता को समझने और प्राप्त करने के तरीके खोजने में मदद करती है दूसरों के साथ. समाजीकरण के विपरीत, शिक्षा योजनाबद्ध होती है, इसमें आमतौर पर एक औपचारिक संगठन शामिल होता है सीखने की प्रक्रिया प्रदान करने और निगरानी करने के लिए जिम्मेदार है और सीमित कौशल और ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करता है। दूसरे शब्दों में, समाजीकरण एक ऐसी क्रिया है जिसके माध्यम से अंतःक्रिया की सहायता से एक व्यक्ति एक व्यक्ति बन जाता है समाज का सदस्य. यह एक सीखने की प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य लोगों को उन भूमिकाओं के लिए तैयार करना है जिनकी वे व्याख्या करेंगे

भविष्य में। शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विज्ञानों में इसकी कई व्याख्याएँ और अध्ययन शामिल हैं समाज और व्यक्ति के वैयक्तिकरण पर समाजीकरण का संबंध और पारस्परिक प्रभाव। हालाँकि, सबसे आशाजनक और प्रभावी संयोजन में किसी व्यक्ति के विकास का अध्ययन है मनुष्य की व्यक्तिगत विशिष्ट विशेषताओं और सामाजिक परिवेश के पारस्परिक प्रभाव से। नतीजतन, ज्ञान का अधिकतम वैयक्तिकरण निर्धारित होता है। मानव समाजीकरण में शिक्षा की भूमिका है उसके आस-पास की दुनिया के बारे में व्यक्ति की जागरूकता से निर्धारित होता है, के प्रभाव में निर्मित होता है आस-पास की सामाजिक परिस्थितियाँ और अंत में महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अर्जित परिणाम से निर्धारित होता है ज्ञान और मानदंड. प्राथमिकता इस तथ्य से भी निर्धारित होती है कि शिक्षा की अवधारणा सार्वभौमिक है: उदाहरण के लिए, एकल शैक्षिक स्थान बनाने के लिए बड़े पैमाने पर अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाएँ हैं,

अनुसूचित जाति के लोगों की अवधारणा-

अनुसूचित जातियाँ वे अछूत हैं जो हिंदू धर्म का पालन करना जारी रखते हैं। अनुसूचित जाति शब्द को पहली बार भारत सरकार के अधिनियम 1935 में शामिल किया गया था। अनुसूचित जाति के रूप में जातियों के वर्गीकरण का उद्देश्य उन लोगों के हितों की रक्षा करना है जो जातिगत भेदभाव से पीड़ित हैं और उन्हें विकास की प्रक्रिया में बाकी आबादी के साथ तालमेल बिठाने में मदद करने के लिए विशेष रियायतें प्रदान करना है।

भारत सरकार अधिनियम 1935 ने इन प्रकार के अभावों, विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक, को इस आधार पर निर्धारित किया कि-

- हिंदू सामाजिक संरचना में उनका कानूनी स्थान है।
- वे शिक्षा में पिछड़े हैं।
- सरकारी सेवाओं, व्यापार, वाणिज्य और उद्योग के क्षेत्र में उनका प्रतिनिधित्व अपर्याप्त है।
- वे बाकी आबादी से सामाजिक और शारीरिक अलगाव से पीड़ित हैं।

भारत में अनुसूचित जातियाँ-

भारतीय सामाजिक पदानुक्रम में अनुसूचित जातियों को सबसे कमजोर घटकों में से एक माना जाता है। उन्हें अछूत, हरिजन, दलित, पंचमने, अतिशूद्र, अवर्ण और अंत्यज जैसे कई नाम दिए गए हैं। दलित वर्ग शब्द उन जातियों को संदर्भित करता है जो हिंदू जाति पदानुक्रम की सबसे निचली श्रेणी से संबंधित हैं और जिनके स्पर्श या निकटता को सवर्ण हिंदुओं द्वारा अपवित्र माना जाता है। "जाति" शब्द गरीबी और उनकी उत्पीड़ित स्थिति को दर्शाता है। "दास वर्ग" वाक्यांश का उपयोग उच्च जातियों के साथ उनके कामकाजी संबंधों की दासतापूर्ण प्रकृति और काम की अपमानजनक प्रकृति को दर्शाता है जिसमें वे शामिल थे जैसे मैला ढोना, झाड़ू लगाना आदि। संत नरसिंह मेहता और महात्मा गांधी ने अनुसूचित जातियों को हरिजन नाम दिया था। हरिजन वे लोग हैं जो अमानवीय सामाजिक अस्तित्व, घोर गरीबी, आर्थिक शोषण और अधीनता और राजनीतिक शक्तिहीनता की उप-संस्कृति में उलझे हुए हैं।

अनुसूचित जातियाँ हिंदू धर्म की पूर्व अछूत जातियाँ थीं। चार पारंपरिक जातियों के अलावा चातुर्वर्ण्य के शुरुआती दिनों में भी लोगों का एक और समूह था, जिन्हें अछूत कहा जाने लगा क्योंकि वे गहरे रंग के थे और गंदे कामों में लगे हुए थे। ये लोग बहिष्कृत जाति के थे और इसलिए सवर्ण हिंदुओं द्वारा सामाजिक रूप से प्रताड़ित किए जाते थे। समाज में सबसे निचले तबके के रूप में, अछूतों ने पाँचवाँ वर्ण पंचमन/चांडाल या पाँचवीं जाति बनाई। उन्हें शूद्रों की तुलना में बहुत कम दर्जा दिया गया था। उनके वंशानुगत व्यवसाय सड़क पर झाड़ू लगाना, मैला ढोना, बुनाई, चमड़ा बनाना आदि थे। उनसे समाज में सभी गंदे काम करने की उम्मीद की जाती थी, जिन्हें करने से दूसरों को रोका जाता था। अनुसूचित जाति के लोग उच्च जाति के लोगों के विभिन्न स्तरों से दूर रहते थे।

निष्कर्ष

समाजीकरण और शिक्षा का सीधा संबंध व्यक्ति के समग्र विकास से है। ये प्रक्रियाएं एक व्यक्ति को तैयार करना और विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों और सांस्कृतिक एकीकरण में उनका समावेश सुनिश्चित करना। के लिए सकारात्मक प्रभाव हो, शिक्षा व्यक्तिगत विकास प्रक्रियाओं के अनुरूप होनी चाहिए विशिष्टताएँ और आयु, स्थूल और सूक्ष्म पर्यावरण की विशिष्टताएँ। वैश्विक दुनिया में शिक्षा होनी चाहिए मौलिक, विकासशील मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुकूल और, अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण, ध्यान में रखें विज्ञान और प्रौद्योगिकी की आधुनिक उपलब्धियाँ। समाजीकरण में शिक्षा का महत्व संदेह से परे है। इंसान को अधिकार देना ज्यादा जरूरी है उस व्यक्तिगत पथ को चुनना और ढूँढना जो विशेष रूप से इस बच्चे के लिए उपयुक्त हो। विशेष वाले शैक्षिक आवश्यकताएँ, माता-पिता, बच्चों का समूह, कक्षा, स्कूल, शहर, राज्य, आदि। केवल इसी तरह से शिक्षा हो सकती है प्रत्येक व्यक्ति के समाजीकरण और अहसास की प्रक्रिया में अपनी अग्रणी भूमिका और मिशन को पूरा करें, जो जोड़ता है एक सामाजिक घटना के रूप में शिक्षा का महत्व।

संदर्भ

1. भारतसरकार(1974)समानताकीओर,भारतमेंमहिलाओंकीस्थितिपरसमितिकीरिपोर्ट,समाजकल्याण विभाग,शिक्षावसमाजकल्याणमंत्रालय,नईदिल्ली।
2. इंडिया,
(1997)नेशनलकमीशनफॉरशिडयूल्डकास्टएंडशिडयूल्डट्राइब्स,न्युदिल्ली,ऐहेन्डबुकनईदिल्ली।
3. आहुजा,राम(1999)भारतीयसामाजिकव्यवस्था,रावतप्रकाशनजयपुर,नईदिल्ली।
4. अनिरुद्धप्रसाद-सामाजिकन्यायएवंराजनीतिकसन्तुलन,रावतपब्लिकेशन्स,जयपुर,नईदिल्ली,पृ0 47-48 5

5. अम्बेडकर डॉ. भीमराव: “अस्पृश्यकौन और क्यों” हिन्दीग्रन्थ अकादमी भोपाल
6. मर्दहिव, एल. वी. (2003ए)। सामाजिक शिक्षाशास्त्र। मॉस्को: गार्डारिकी.
7. देसेव, एल. (2003बी). मनोविज्ञान का शब्दकोश. सोफिया: बुल्गारिका।
8. जॉर्जीवा, वी. (2016)। समाजीकरण - एक वर्तमान समझ. इयरबुक में - थैकिया विश्वविद्यालय, संकाय
9. शिक्षा, स्टारा ज़गोरा: थैकिया विश्वविद्यालय, वॉल्यूम। XIII, पृ. 62-70.
10. तुम्बाच, धम्मेल। (2021ए)। समाजीकरण में शिक्षा की भूमिका. ऑनलाइन नोट बैंक से लिया गया:
11. लोकतांत्रिक संस्थाओं और मानवाधिकारों के लिए ओएससीई कार्यालय। (2021बी)। स्कूल में मानवाधिकार शिक्षा
12. डेविस, बी. (2021सी)। समाजीकरण में शिक्षा की क्या भूमिका है? एमवीऑर्गेनाइजिंग से लिया गया:
13. ज़िग, एस. (2021डी)। कल की दुनिया. वेबस्टेज से लिया गया
14. व्यक्ति के समाजीकरण में शिक्षा की भूमिका। (2021ई)। स्टूडोपीडिया से लिया गया:
15. कुटेवा-स्वेत्कोवा, वी. (2000)। शिक्षा शास्त्र। वेलिको टार्नोवो: यूआई "सेंट। सेंट सिरिल और मेथोडियस"।
16. रश्कोवा, एल.एम. (2017)। व्यक्तित्व विकास के लिए समाजीकरण, पालन-पोषण और शिक्षा की भूमिका।
17. (एस. इलीवा, एड.) सोशियोब्रेन: इंटरनेशनल साइंटिफिक रेफरीड ऑनलाइन जर्नल विद इम्पैक्ट फैक्टर(39),